Indian J.Soc & Pol. 03(03):2016:113-116 **ISSN 2348-0084 (PRINT)**
(Special PrintIssue: September, 2016) **ISSN 2455-2127(ONLINE)**

सम्राट भोज एवं महमूद गजनवी

देवाराम[1]
[1]व्याख्याता इतिहास,राजकीय बाँगड़ महाविद्यालय,पाली–राजस्थान, भारत

ABSTRACT

गजनी का तुर्क मुस्लिम शासक महमूद गजनवी 1000 ई. से निरन्तर भारतीय भू–प्रदेश पर आक्रमण कर रहा था। उसके आक्रमणों का प्रतिरोध पश्चिमोत्तर भारत के शाही वंश के नरेश करते जा रहे थे, परन्तु वे महमूद गजनवी की सेना को आगे बढ़ने से रोक नहीं सके। अनेक विजय–पराजय के साथ महमूद का सैन्य मुल्तान तक बढ़ आया था। 1010 ई. में महमूद गजनवी ने मुल्तान पर आक्रमण किया। आक्रमण की यह तिथि गलत भी हो सकती है। क्योंकि 1012 ई तक शाही नरेश आनन्दपाल जीवित था तथा वह महमूद को कड़ा संघर्ष दे रहा था। अतः उसके रहते महमूद का मुल्तान तक पहुँच जाना असम्भव ही लगता है। अतः यह तिथि 1012 ई. के बाद की भी हो सकती है। यद्यपि 1012 ई. तक आनन्दपाल का उत्तराधिकारी शाही नरेश त्रिलोचनपाल जीवित था तथा संघर्ष कर रहा था। इसी संदर्भ में प्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य चतुरसेन ने भी अपने ग्रन्थ में इसकी पुष्टि की है। सम्भव है इस कॉलोनी का शासक दाऊद हो जिसने सुरक्षा के लिए किलेबन्दी कर ली हो। कुछ इतिहासकार सम्राट भोज को इतना शक्तिशाली नही मानते थे। उनका यह सोचना था कि वह महमुद गजनवी को पंजाब पर अधिकार करने पर कैसे रोक दिया जबकि उस समय के सहयोगी राजाओं ने भोज की सहायता नही की थी। लेकिन तत्कालिक परिस्थितियों का विश्लेषण करने पर यह स्थिति स्पष्ट होती है कि भोज ने यह पुण्य कार्य किया।

***KEY WORDS:** प्राचीन भारत, चाहमान, भोज परमार, महमूद गजनवी*

999 ई. में मालवा नरेश सिन्धुराज की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र भोज परमार साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। प्रारम्भिक कठिनाइयों को पार करते हुए 1010 ई. तक वह पर्याप्त शक्तिशाली हो गया। शाकम्भरी के चाहमान शासकों के साथ उसके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। महमुद गजनवी ने 1010 ई. में मुल्तान पर आक्रमण किया।(प्रसाद,पृ81)

मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार उस समय मुल्तान पर करमत मुस्लिम सम्प्रदाय का अब्दुल फतह दाऊद शासक था।(वही, पृ81)परन्तु कतिपय भारतीय इतिहासकारों ने मुल्तान का शासक चाहमान वंशी अजयपाल को माना। अरब यात्री (अलमसूदी, 943) ने अपने ग्रन्थ मुरूज उल जहान 943 ई. में उल्लेख किया है कि बऊर (सम्राट मिहिर भोज प्रतिहार) सेना थी। उसने चारों दिशाओं में अपनी सेना की एक एक टुकड़ी नियुक्त कर दी थी। प्रत्येक टुकड़ी में सैनिकों की संख्या 7 से 9 लाख के मध्य थी(पाण्डेय, पृ0120.121) चारों केन्द्रों में काठियावाड़ सौराष्ट्र में चालुक्य बलवर्मन एवं उसका पुत्र अवन्तिवर्मन(वही,पृ115) उज्जैन में परमार, पूर्व मं गोरखपुर में कल्चुरि सामन्त शंकरगण प्रथम के पुत्र गुणसागर प्रथम (गुणाम्बोधिदेव)(वही, पृ112), उत्तर–पश्चिम में मुल्तान में चाहमान। महेन्द्रपाल द्वितीय के प्रतापगढ लेख से विदित होता है कि एक चाहमान नृपवंश जिसकी उत्पत्ति पृथ्वी की रक्षा हेतु हुई थी, श्री भोजदेव के लिए उच्च सुख का कारण था।(वही पृ110) पृथ्वी की रक्षा शब्द लिखने का कारण भी समझ में आता है कि चाहमान शासकों पर पश्चिमोत्तर सीमा की सुरक्षा का भार था। इस प्रकार 885 ई. से ही मुल्तान पर चाहमान शासकों का ही अधिकार था। प्रसिद्ध साहित्यकार चतुरसेन शास्त्री ने भी इसकी पुष्ठि की।(चतुरसेन,2014) मुल्तान पर दाऊद के शासक होने का कोई ऐतिहासिक प्रमाण भारतीय साहित्य में नहीं मिलता। यह सम्भव है कि सिन्ध मुल्तान पर अरब इस्लामिक आक्रमण के समय अनेक मुस्लिम परिवार ईरान से भारत में आकर बस गये थे, जिन्होंने सब प्रकार की सम्पन्नता अनुकूलता देखकर व्यापार के लिए मुल्तान में अपनी बस्ती बसा ली थी।(प्रसाद,पृ63)

महमूद गजनवी एवं उसके पूर्व पिता गजनी शासक सुबुक्तगीन ने पंजाब पर अधिकार करने की दृष्टि से अनेक फकीरों एवं मौलवियों को पंजाब–सिन्ध के प्रमुख स्थानों में जासूसी की दृष्टि से भिजवाया था जिनका कार्य स्थान–स्थान पर अपने अड्डे स्थापित कर अपने जादू टोने एवं मंत्र–तंत्र के आधार पर स्थानीय लोगों में पैठ बनाना, उनका विश्वास प्राप्त करना तथ उन स्थानों की सूचनाएँ अपने शासक तक पहुँचाना

1.Corresponding Author

था, जिसे उन्होंने बखूबी से निभाया। भारतीय स्वभाव से ही धर्मसहिष्णु होते है। कहते हैं चाहमान शासक अजयपाल के कोई सन्तान नहीं थी। मुल्तान अथवा लाहौर के फकीर के मंत्र–तंत्र से उसके सन्तान हो गई। अतः अजयपाल के मन में उस फकीर के प्रति आदर–श्रृद्धा का भाव बन गया था। मुल्तान का शासक शक्तिशाली था। अतः महमूद उससे सीधे टकराना नहीं चाहता था। मुस्लिम पीर के कारण अजयपाल व महमूद में समझौता हो गयां मुल्तान पर बिना छेड़छाड़ किये कुछ दिन रूक कर महमूद ने सिन्ध पर आक्रमण करना चाहा। परन्तु वहाँ स्थित मुस्लिम पीर–फकीरों ने सूचना भिजवायी कि सुल्तान सिन्ध पर आक्रमण करने की भूल न करे क्योंकि सिन्ध का सैन्धव राजा हम्मुक(हेमचन्द्र पृ117.124) अत्यन्त शक्तिशाली है, अतः पराजय का खतरा अधिक है। ऐसी सूचना मिलने पर महमूद ने सिन्ध पर आक्रमण करने का विचार त्याग दिया। सिन्ध के राजा से समझौता करने अथवा सिन्ध से शाकम्भरी जाने का मार्ग प्राप्त करने में भी वह सफल नहीं हो सका। ऐसी स्थिति में उसने मुल्तान से राजपूताने में घुसकर आगे बढ़ने का प्रयत्न किया। उसके आक्रमण का लक्ष्य था शाकम्भरी का चाहमान राज्य।

राजपूताने का सीमावर्ती राज्य था तन्नौट (जैसलमेर)। तन्नौट का भाटी शासक विजयराज प्रथम भी बड़ा शक्तिशाली शासक था।(नैणसी, 1967पृ22) वह चाहमान राजाओं का प्रतिनिधि शासक था। महमूद गजनवी के आक्रमण की सूचना मिलते ही उसने चाहमान शासक गोविन्द तृतीय को सूचना भिजवायी। गोविन्द तृतीय ने अपने मित्र भोज परमार को सूचना भिजवायी तथा सहायता का निवेदन किया। महमूद गजनवी जानता था कि यदि चाहमान राज्य पर विजय प्राप्त कर ली जाए तो सोने की चिड़िया भारत को विजय करना आसान हो जाएगा। उत्तर पश्चिम के शाही राज्य के पश्चात् उसके मार्ग का सबसे शक्तिशाली राज्य चाहमानों का ही था। शीध्र ही भोज स्वंय सेना लेकर अपने मित्र की सहायता के लिए उपस्थित हो गया। महमूद गजनवी की सेनाओं ने तन्नौट जैसलमेर के भाटी राज्य में प्रवेश करने की चेष्टा की जहाँ नरेश भाटी विजयराज प्रथम एवं राजपूत सरदारों की सेना सहित गोविन्द तृतीय एवं भोज की विशाल सेना प्रतिरोध करने के लिए तैयार थी। देखते ही देखते दोनों ओर की सेनाओं में भीषण युद्ध प्रारम्भ हो गया। गजनवी की सेना गाजर मूली की तरह काट डाली गई। बड़ी कठिनाई से बची हुई सेना को साथ लेकर महमूद भागकर गजनी पहुँच सका। यह एक ऐसी पराजय थी जिसकी कल्पना स्वप्न में भी महमूद नहीं कर सका था। वस्तुतः प्रथम बार ही गजनवियों को ऐसी पराजय मिली। इसकी पृष्टि राजशेखर कृत प्रबन्धकोश से होती है कि गोविन्द तृतीय ने महमूद गजनवी को पराजित किया था। प्रबन्धकोष के इस कथन की पृष्टि मुस्लिम इतिहासकार फरिश्ता ने भी की है। फरिश्ता कहता है कि मजमूद गजनवी को सिन्ध से ही वापस लौटना पड़ा क्योंकि अजमेर के शासक ने एक विशाल सेना रास्ते में लगा दी थी। उदयपुर प्रशस्तिके श्लोक 19 में भोज परमार द्वारा तुरूष्क तुर्क मुस्लिम विजय करने का स्पष्ट उल्लेख है। मुहतों नेणसी की ख्यात भाग दो पृ. 22 में उल्लेख मिलता है, उसके अनुसार विजयराज प्रथम चूडाला के समय सिन्ध की ओर से एक मुस्लिम सेना तन्नौट पर चढ़ आई । विजयराज युद्ध में विजय रहा। आगे लिखा है – ईरान खुरासान के बादशाहों में झालो वाराहों आदि के विरूद्ध बाईस युद्ध में उसने विजय प्राप्त की। यह भी वर्णन मिलता है कि राव तन्तु ने तन्नौट बसाया व राजधानी बनायी। राव तनु विजयराज प्रथम का पिता व देवराज का दादा था।

1020 ई. के पूर्व ही सम्भवतया 1014–15 ई. के आसपास दिल्ली के तोमर राज्य पर चाहमानों ने विजय प्राप्त कर दिल्ली को अपने साम्राज्य में मिला लिया। चाहमान नरेश वाक्पतिराज के पुत्र सिंहराज ने अपने को प्रतिहार साम्राज्य से स्वतन्त्र करते हुए महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी। हर्ष के प्रस्तर अभिलेख श्लोक 19 से विदित होता है कि वाक्पतिराज ने तोमर नायक सलवण को पराजित कर उसका वध किया एवं उसके मित्रों को कारागार में डाल दिया था। उन्हें कारागार से छुड़ाने के लिए रघुकुल चक्रवर्ती (प्रतिहार सम्राट विजयपाल) उसके दरबार में पहुँचा था। इससे स्पष्ट है कि सिंहराज केवल स्वतन्त्र शासक हीं नहीं था बल्कि एक शक्तिशाली शासक भी था। परन्तु इस समय तक दिल्ली पूर्णरूपेण चाहमानों के अधिकार में नहीं आई थी। बाद में दुर्लभराज तृतीय के समय दिल्ली पर पूर्णयपेण चाहमानों का अधिकार हो गया था। अतः उनका सीधा संघर्ष तुर्कों के मध्य हुआ। पृथ्वीराज विजयसे जानकारी मिलती है कि दुर्लभराज तृतीय एवं तुर्कों के मध्य संघर्ष हुआ जिसमें दुर्लभराज मारा गया तथा हांसी, थानेसर पर तुर्को ने अधिकार कर लिया।

दुर्लभराज की मृत्यु पर उसका भाई विग्रहराज तृतीय जिसकी प्रसिद्धि बीसल के नाम से हुई थी, का विवाह बीसलदेव रासौ ग्रन्थ के अनुसार, परमार वशं की राजपुत्री से हुआ। बीसलदेव की सहायता के लिए सम्राट भोज आगे आए और उन्होंने दोनों की सेनाओं के साथ तुर्कों पर भीषण आक्रमण किये। यह आक्रमण 1044 ई. में किये। सम्राट भोज की विजय हुई तथा तुर्को से हांसी, थानेसर एवं काँगड़ा को छीन लिया तथा इन स्थानों पर पुनः हिन्दू देवी देवताओं को प्रतिष्ठित किया गया।(गांगुली,पृ73) यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता

कि उस समय तुर्क शासक कोन था ? परन्तु विग्रहराज तृतीय के पुत्र पृथ्वीराज प्रथम का जिक्र करते हुए कहता है – पृथ्वीराज प्रथम ने भी तुर्कों के विरूद्ध सफलता प्राप्त की थी। प्रबन्धकोष पराजित तुर्क शासक का नाम बगुलीशाह देता है। (बगुलीसाहसुरजाणभुजमदी)

तिथि की स्पष्ट जानकारी के अभाव में यह स्पष्ट रूप से कहना कठिन है कि इन विजयों के लिए सम्राट भोज परमार ने चाहमान नरेश बीसलदेव की सहायता की थी अथवा उसके उत्तराधिकारी पृथ्वीराज प्रथम की सहायता की थी। यह भी सम्भव है कि बीसलदेव के स्थान पर पृथ्वीराज प्रथम की सहायता की थी। यह भी सम्भव है कि बीसलदेव के स्थान पर पृथ्वीराज प्रथम ने बीसलदेव के जीवित रहते चाहमान सेना का नेतृत्व किया हो।यहाँ एक प्रश्न इतिहासकारों के समक्ष उपस्थित होना स्वाभाविक है कि सम्राट भोज इतना शक्तिशाली थ फिर उसने महमूद गजनवी को पंजाब पर अधिकार कैसे करने दिया ? उसने शाही शासकों का उस समय सहयोग क्यों नहीं किया जब शाही नरेश गजनवियों से जूझ रहे थे ? प्रश्न बिल्कुल सही है। इससे प्रथमदृष्टया ऐसा लगता है कि उस काल के राजाओं में राष्ट्रीय दृष्टि का अभाव था। यदि ऐसा नहीं होता तो जैसे कलिंग सम्राट खरवेल मगध के विरूद्ध अपने विजय अभियान को छोड़कर यूनानियों के आक्रमण का मुकाबला करने के लिए सुदूर उत्तर पश्चिमी भारत में पहुँचा तथा यूनानियों को मारकर भगाया व भारतीय सीमाओं को सुरक्षित किया वैसा ही सम्राट भोज करता। परन्तु सम्राट भोज पर ऐसा आक्षेप लगाना उसके साथ अन्याय होगा।

तात्कालिक परिस्थितियों का विश्लेषण करने पर ही सही स्थिति स्पष्ट होगी। 999 ई. में भोज मालवा की राजगद्दी पर सिंहासनारूढ़ हुआ। उस समय मालवा चारों और के शत्रुओं से घिरा हुआ था। गुजरात के चालुक्य शासक चामुण्डराज ने युद्ध में भोज के पिता सिन्धुराज को पराजित कर, जयसिंह सूरि कृत कुमारपाल भुवनपाल चरित के अनुसार उसकी हत्या कर दी थी। इसी प्रकार उसके राज्य के दक्षिण का शक्तिशाली राज्य कल्याणी का चालुक्य शासक तैलप द्वितीय ने भोज के दादा नरेश मुंज को अपमानित कर कैद में रखकर फाँसी पर चढ़ा दिया था, अतः इन दोनों से प्रतिशोध भी सम्राट भोज को लेना था। दक्षिण पश्चिम के इन दोनों शत्रुओं के अलावा पूर्व दिशा का त्रिपुरी का कलचुरि नरेश गांगेयदेव भी पश्चिम की ओर अपनी शक्ति का विस्तार कर रहा था। उसकी चन्देल नरेश विद्याधर से मित्रता थी, जो उस काल का एक परम शक्तिशाली शासक थ। ऐसी विकट स्थिति में भोज का राज्याभिषेक हुआ। अतः सर्वप्रथम उसे अपने राज्य मालवा को सुरक्षित एवं शक्तिशाली बनाना था तथ अपने शत्रुओं से प्रतिशोध लेकर उनकी शक्ति को तोड़ना था। चूँकि इस समय कल्याणी का चालुक्य शासक चोल संघर्ष में उलझा हुआ था। इसलिए सर्वप्रथम भोज ने कलचुरि शासक गांगेयदेव को पराजित कर उसके साथ समझौता किया।(उदयपुर प्रशस्ति तथा कलवन अभिलेख) उसके बाद उसने गुजरात के चालुकय शासक को परजित कर अपने पिता के वध का बदल लिया। उसने उत्तर के शक्तिशाली चाहमान शासकों से मित्रता की। मेवाड़ के गुहिल शासक को पराजित कर अपने अधिकार में किया। इसके पश्चात् पूरी तैयारी के साथ कल्याणी के चालुक्य शासक पर आक्रमण किया। इस आक्रमण से पूर्व भोज ने चोल सम्राट से सन्धि कर मित्रता स्थापित कर यह निर्णय किया कि जब भोज उत्तर की ओर से कल्याणी पर आक्रमण करे उसी समय चोल सेनाएँ दक्षिण दिशा से कल्याणी पर आक्रमण करे। त्रिपुरि का कलचुरि शासक गांगेयदेव अपनी सेना सहित भोज के साथ था ही। युद्ध में कल्याणी का चालुक्य शासक पराजित हुआ तथा भोज ने उस प्रदेशों पर पुनः अधिकार कर लिया जिन पर पूर्व में उसके दादा नरेश मुंज का अधिकार था। इस प्रकार अपने शत्रुओं को पराजित कर मालवा को सुरक्षित एवं शक्ति सम्पन्न बनाने में पर्याप्त समय लगना स्वाभाविक था। जबकि भोज स्वंय ही जब तक सुरक्षित नहीं था वह कैसे अन्यों की मदद कर सकता था। निश्चित रूप से इन सब परिस्थितियों का समाधान करने में भोज को 10 से 15 वर्ष लगे ही होंगे। ज्योहिं वह सक्षम हुआ उसने तुरन्त सैन्य सहित स्वयं को महमूद गजनवी के आक्रमण का मुकाबला करने के लिए चाहमान नरेश की सहायता के लिए उपस्थित कर दिया। इस युद्ध में गजनवियों को भी भारत के वीरों की तलवारों के पानी का स्वाद चखना पड़ा। ऐसा लगता है कि इस बुरी पराजय के पश्चात् मजमूद गजनवी भारत पर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया होगा। भविष्य पुराण महमूद गजनवी की इस पराजय एवं भोज परमार की विजय की पुष्टि करता है। थानेसर पर आक्रमण के पश्चात यह उसका अन्तिम आक्रमण था।

यहाँ एक प्रश्न फिर उपस्थित होता है, वह यह कि तन्नौट के युद्ध में महमूद गजनवी को इतनी बुरी तरह पराजित करने के पश्चात् सम्राट भोज एवं महान नरेश गोविन्द तृतीय की सेना ने आगे बढ़कर भारतीय भू भाग, जिस पर तुर्कों ने अधिकार कर लिया था, उन्हें पुनः तुर्कों की गुलामी से मुक्त क्यों नहीं करवाया।यहाँ हम सम्राट भोज व चाहमान नरेश का समर्थन तो नहीं कर सकते परन्तु इतना अवश्य कहेंगे कि गुजरात के चालुक्य एवं कल्याणी के चालुक्य सम्राट भोज से प्रतिशोध लेने के लिए तैयार बैठे थे। आगे की परिस्थितियाँ इस बात की पुष्टि करती है। ज्योंहि भोज वृद्धावस्था में अस्वस्थ

होकर मृत्युशैय्या पर था तो सबसे पहले कल्याणी के चालुक्य नरेश समेश्वर प्रथम ने धारा नगरी मालवा की राजधानी पर आक्रमण कर दिया जिसका मुकाबला भोज का उत्तराधिकारी जयसिंह नही कर सका। परन्तु जब तक सम्राट भोज जीवित रहे तब तक किसी की हिम्मत मालवा पर आक्रमण करने की न हो सकी। सम्राट भोज ज्योंहि शक्तिशाली हुए उन्होंने चाहमान शासक के साथ मिलकर महमूद गजनवी को पराजित किया। राजपूताना की सीमा तथा उसके पश्चात् 1044 ई. के लगभग चाहमान नरेश के साथ हांसी, थानेसर एवं काँगड़ा तक के प्रदेशों को स्वतन्त्र करा लिया। इससे यह माना जा सकता है कि उसकी भावी योजना सम्पूर्ण क्षेत्र को स्वतन्त्र करवाने की रही होगी।भविष्य पुराण सम्राट भोज के विषय में हमें एक तथ्य उपलब्ध करवाता है जिसके अनुसार तन्नौट युद्ध में महमूद गजनवी की पराजित होकर पलायन करती सेनाओं का सम्राट भोज ने पीछा किया था। लौटते हुए महमूद की सेना के काफी सैनिक सिन्धु नदी में डूब कर मर गये। सम्राट भोज की सेना ने महमूद गजनवी का गान्धार प्रदेश गजनी तक पीछा किया तथा वहाँ मजमूद ने अपने को भोज के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। महमूद गजनवी को गान्धार तक ही सीमित रहने की चेतावनी देते हुए भोज अपनी राजधानी लौट आया। इससे स्पष्ट है कि सम्राट भोज ने सम्पूर्ण भारतीय भू भाग को तुर्कों के अधिकार से मुक्त करा लिया था।

भविष्य पुराण के प्रतिसर्गपर्व तृतीय खण्ड में जैसा उल्लेख मिलता है – वह इस प्रकार है – शालिवाहन के वंश में अन्तिम दसमवें राजा भोजराज हुए। (शालिवाहन सम्भवतया उपेन्द्र का पिता होगा।) उन्होंने देश की मर्यादा क्षीण होती देख दिग्विजय के लिए प्रस्थान किया। उनकी सेना दस हजार थी और उनके साथ कालिदास एवं अन्य विद्वान ब्राम्हण भी थे। उन्होंने सिन्धु नदी को पार करके गान्धार, म्लेच्छ और कश्मीर के शाह राजाओं को परास्त किया तथा उनका कोष छीनकर उन्हें दण्डित किया। उसी प्रसंग में आचार्य एवं शिष्यमण्डल के साथ म्लेच्छ महामद महमूद नाम का व्यक्ति उपस्थित हुआ। राजा भोज ने मरूस्थल में विद्यमान महादेव जी का दर्शन किया। गुप्त शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूप वाले गिरिजापते याने मक्केश्वर महादेव आप त्रिपुरासुर के विनाशक तथा नानाविध मायाशक्ति के प्रवर्तक है। मैं आपकी शरण में आया हूँ, आप मुझे अपना दास समझें। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। इस स्तुति को सुनकर भगवान शिव ने राजा से कहा – हे भोजराज। तुम्हें महाकालेश्वर तीर्थ में उज्जैन मालवा जो कि भोजराज की राजधानी थी जाना चाहिए। यह वाहीक नाम की भूमि है, पर अब म्लेच्छों से दूषित हो गई है। इस दारूण प्रदेश में आर्य धर्म है ही नहीं। महामायावी त्रिपुरासुर यहाँ दैत्यराज बलि द्वारा प्रेषित किया गया है। मेरे द्वारा वरदान प्राप्त कर वह दैत्य समुदाय को बढ़ा रहा है। वह अयोनिज है। उसका नाम महामद है। राजन। तुम्हें इस अनार्य देश में नहीं आना चाहिए। मेरी कृपा से तुम विशुद्ध हो। भगवान शिव के इन वचनों को सुनकर राजा भोज सेना के साथ अपने देश में वापस चला आया। उन्होंने पचास वर्ष तक राज्य किया। उन्होंने देश में पर्यादा का स्थापन किया। विन्ध्यगिरि और हिमालय के मध्य में आर्यावर्त की पुण्यभूमि है, वहाँ आर्य लोग रहते है।

अतः हम गौरव के साथ कह सकते हैं कि सम्राट भोज परमार ने तुर्क–मुसलमानों की शक्ति जो मजमूद गजनवी के रूप में उदित हुई, भारतीय भू भाग में अव्यवस्था पैदा की थी, उसका सम्पूर्ण नाश कर दिया, सम्भवतः 1015–16 के आसपास क्योंकि तन्नौट पर उसका अन्तिम आक्रमण था। सम्राट भोज तन्नौट युद्ध विजय करने तक ही नहीं रूका तो उसकी सेनाओं ने सिन्धु को पार कर गजनी होकर सुदूर अरब क्षेत्र में मक्का तक विजय पताका फहराते हुए मक्केश्वर महोदव के दर्शन किये तथा महादेव के दर्शन कर महमूद गजनवी को गजनी तक ही सीमित कर दिया।

सन्दर्भ

हर्ष का प्रस्तर अभिलेख श्लोक 19

हेमचन्द्र, आचार्य :*द्वयाश्रय काव्य*

भविष्य पुराण प्रतिसर्गपर्व, पृतीय खण्ड –संक्षिप्त भविष्य पुराण ,गोरखपुर, गीताप्रेस

पाण्डेय, बी के :*प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिकइतिहास*

प्रसाद, ईश्वरी : *भारतीय मध्ययुग का इतिहास*

राजशेखरः *प्रबन्ध कोष*

चतुरसेन, आचार्य (2014):*सोमनाथ,* नई दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स

नैणसी, मुहंता (1967): *नैणसी री ख्यात* भाग दो, जोधपुर, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान

अरब यात्री अलमसूदी (943):*मरूज उल जहान*

गांगुली, डी सी:*परमार राजवंश का इतिहास,* राजस्थान ग्रंथागार